ओम् शान्ति 14-07-12 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

– दादी गुल्ज़ार

आज अमृतवेले विशेष फॉरेन के सेवा के निमित्त बने हुए बहनों और भाइयों की याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची। बापदादा सामने खड़े थे और दूर से ही अपने अमूल्य बाँहों के हार द्वारा मुख की मुस्कान और नयनों की दृष्टि द्वारा मिलन मना रहे थे। मैं भी उसी स्नेह में समाते हुए सम्मुख गयी तो ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे मैं शक्ति के सागर में समा गयी। कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची आज क्या समाचार लाई हो। मैं बोली बाबा आज तो आपकी लाड़ली दादी जानकी जी के साथ आपके प्यारे फॉरेन के अथक सेवाधारी बहनों और भाइयों की याद लायी हूँ। बाबा बोले बापदादा भी आज फॉरेन के बच्चों को याद कर रहे थे। जैसे बाबा ने कहा इतने में आप सभी फॉरेन के बच्चे पहुँच गये और हार्ट की शेप में खड़े हो गये, बाबा बहुत प्यार से दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि मिलते ही जैसे वर्षा होती है, ऐसे रंग बिरंगे डायमण्डस् की वर्षा हो रही थी और आप सब मन ही मन में डॉन्स कर रहे थे। वायुमण्डल बहुत खुशी का था, फिर बाबा बोले अभी सर्किल रूप में बैठ जाओ, तो सब दृष्टि लेते बैठ गये और दृष्टि में ऐसे समा गये जो सीन देखने वाली थी। फिर बाबा ने जयन्ती बहन को बुलाया और दादी के साथ आगे बिठाया। फिर बाबा बोले बच्चे सर्विस तो बहुत उमंग-उत्साह से कर रहे है, बापदादा बच्चों पर खुश है। परन्तु ये आवाज निकले कि हमारा बाबा आ गया। यही है, यही है! इसके लिए प्लैन बनाओ। बापदादा ने पहले भी कहा है कि संगम के समय का एक-एक संकल्प एक-एक मिनट सफल करो। इस कारण मन पर कन्ट्रोल करने की आवश्यकता है। अब हरेक सोचो कितनी परसेन्ट में कन्ट्रोल है, क्योंकि बच्चे अगर स्वराज्य अधिकारी नहीं बनेंगे तो विश्व राज्य अधिकारी कैसे बनेंगे? जैसे राजा आर्डर करता है - ये लॉ है, ये आर्डर है, ऐसे मन को भी लॉ में रखो, आर्डर में चलाओ। बापदादा अभी यही चाहते है मन के मालिक बनो। वेस्ट थॉट्स पर कन्ट्रोल करने के लिए पहले चेक करो कि सर्व शक्तियों का स्टॉक मेरे पास है, क्योंकि स्टॉक से स्टॉप सहज हो जायेगा।

फिर बाबा बोले मेरे बच्चे बहुत बिजी रहते है, डबल-डबल सेवा भी करते है, तो बाप को विशेष बच्चों पर प्यार आता है। तो बोलो बच्ची इन्हों को कौन सी सौगात देगी। तो क्या देखा बाबा का कहना और सामने सौगात का टेबुल आ गया। उसमें देखा ताज और चिन्दियां थी। ताज नये प्रकार का था, आठ शक्तियों की भिन्न-भिन्न लाइट अर्ध-चन्द्रमा के रूप में ताज के बीच में चमक रही थी और बीच में एक बड़ा सुनहरी लाल हीरा चमक रहा था। बाबा ने सबको सामने बुलाके एक-एक को ताज दिया और यही बोला - बच्चे सदा शुभ चिन्तन और श्रेष्ठ चिन्तन की चिन्दी मन में और मस्तक में रहे। ऐसे सब सौगात लेते लगन में मगन हो गये फिर बाबा ने सबको स्नेहमयी दृष्टि देते साकार वतन में भेज दिया। हमें और दादी जानकी को गले लगाते दृष्टि देते साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति।